Research scholar -MAMTA
SOCIOLOGY
C.S.J.M.U., Kanpur,U.P.
(D.S.N.PG COLLEGE UNNAO)

TOPIC-वैश्वीकरण एवं महिलाएं

वैश्वीकरण एवं महिलाएं

सार- आज का युग वैश्वीकरण का युग है।**राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के शब्दों में**"मैं नहीं चाहता कि मेरा मकान चारों और दीवारों से घिरा हो और मेरी खिड़कियां बंद हो, मैं तो चाहता हूं कि सभी देशों की संस्कृतियों की हवाएं मेरे घर में जितने भी आजादी से बह सकें बहे,लेकिन मैं यह नहीं चाहता कि उनमें से कोई भी हवा मुझे मेरी जड़ों से ही उखाड़ दे।" आज विश्व के किसी भी कोने में बैठकर संपूर्ण विश्व के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। वैश्वीकरण के इस युग में प्रौद्योगिकी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। महिलाएं हमारे समाज का महत्वपूर्ण हिस्सा मानी जाती रही है। वैश्वीकरण के युग में संपूर्ण विश्व में उथल-पुथल मचा हुआ है **एंथोनी गिडेंस के शब्दों में** "आज सामाजिक आर्थिक राजनीतिक संबंध ऐसे हैं राष्ट्रीय सीमाओं को लाघं कर देशों के बीच दशाओ और भाग्य को निर्धारित करती हैं यही वैश्वीकरण है।" आज वैश्वीकरण की वजह से ही महिलाएं एक देश से दूसरे देश शिक्षा, व्यवसाय इत्यादि के लिए आ जा रही हैं। हमारा भारत देश हमेशा से विश्व बंधुत्व की भावना से ओत-प्रोत रहा है। महिलाओं को उनके अधिकारों एवं मानवाधिकारों के बारे परिचित कराना अत्यंत आवश्यक है। समाज में व्याप्त लैंगिक असमानता विकास को सही दिशा कभी नहीं प्रदान कर सकती है । इसलिए लिंग की परवाह किए बिना पूरी आबादी अपनी पूरी आर्थिक क्षमता के साथ एक साथ आगे बढ़ेगी, तभी सबका विकास एवं सबको लाभ होगा। इसी मूल मंत्र के साथ प्रेरित होकर विकास को एक नई दिशा और दशा प्रदान की जा सकती है । जिसके परिणाम वैश्वीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से देख सकते हैं । वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने आज समाज में आने को क्रांतिकारी परिवर्तन किए हैं। वैश्विक बाजार में महिलाओं की पहुंच और उनकी भागीदारी को बढ़ावा दिया जाए। अवसरों को प्रोत्साहित किया जाए ,बाजार संचालित करने संबंधी कौशल विकसित किया जाए, नौकरी की योग्यता में सुधार करने के लिए प्रशिक्षण दिया जाए, इत्यादि पहलुओं पर विशेष ध्यान देकर महिलाओं की स्थिति को विश्व पटल पर मजबूती प्रदान की जा सकती है। जब महिलाएं आर्थिक रूप से सशक्त होती है तो वह अपने परिवार और समुदाय में आर्थिक सहयोग कर पाती हैं जिससे आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलता है। क्योंकि वैश्विक प्रगति के लिए महिला सशक्तिकरण अहम है। इसको नकार कर हम विकास एवं समृद्धि की सही दिशा और दशा को नहीं प्राप्त कर सकते हैं।

वैश्वीकरण से आशय स्थानीय क्षेत्रीय वस्तुओं व घटनाओं का विश्व स्तर पर रूपांतरण की प्रक्रिया से है । यह प्रक्रिया आर्थिक, सामाजिक ,राजनीतिक एवं तकनीकी ताकतों का संयोजन माना जाता है। वैश्वीकरण से सिर्फ एक पहलू को ही लाभ नहीं होता ,बल्कि विभिन्न देशों के बीच व्यापार में वृद्धि और विकास भी होता है। वैश्वीकरण का उद्देश्य विभिन्न देशों के मध्य सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व अन्य पहलुओं से संबंधित समन्वय को बढ़ावा देना होता है। जिससे विभिन्न देशों के मध्य निवेश, पर्यटन ,सूचना एवं संचार, शिक्षा इत्यादि क्षेत्रों का मिलकर मजबूती से विकास हो पाता है।

हमारे भारत देश में वैश्वीकरण से आशय देश की अर्थव्यवस्था को विश्व की अर्थव्यवस्था के साथ जोड़ना है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने तेजी से भारतीय अर्थव्यवस्था को खोल रहा है। वैश्वीकरण पूंजी, उत्पादों ,सेवाओं व श्रम प्रवास की वृद्धि की प्रक्रिया है।

मुख्य शब्द- वैश्वीकरण, लैंगिक असमानता, मीडिया, शिक्षा, रोजगार, अर्थव्यवस्था।

वैश्वीकरण एवं भारत- वैश्वीकरण की प्रक्रिया से भारतीय अर्थव्यवस्था में काफी वृद्धि देखी गई । तथा वैश्वीकरण ने भारतीय वित्तीय बाजारों को भी प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हमारे देश में विदेशी बाजारों, कंपनियों को अपने विभिन्न क्षेत्रों में निवेश की सुविधा उपलब्ध कराई है। हमारा भारत देश किसी भी विदेशी राज्य के साथ कभी भी दुर्व्यवहार नहीं किया है। बल्कि उसके साथ मित्रता का व्यवहार करते हुए एक दूसरे को सहयोग प्रदान करने का काम किया है। वैश्वीकरण काफी तेजी से बढ़ते हुए विकासशील देशों के लिए अनेकों नए अवसर उत्पन्न करने में लगा हुआ है।

सन 1991 ई को हमारे देश में औद्योगिक नीति आई। जिसके परिणामस्वरुप निजीकरण, उदारीकरण ,वैश्वीकरण की प्रक्रिया पर प्रभाव पड़ा। वैश्वीकरण से जनता के अनेकों क्षेत्र प्रभावित हुए जो जीवन से जुड़े हुए हैं। हमारा भारतीय समाज विविधता युक्त समाज है। जिसमें बहुत से धर्म, जाति, भाषा , क्षेत्र, रीति रिवाज और परम्पराओं का सम्मिश्रण है। हमारे समाज में महिलाएं आर्थिक, सामाजिक वंचनाओ की शिकार होती रही हैं। वस्तुतः पूरा नारी समाज असमानता और पिछड़े पन का शिकार रहा है। यद्यपि इस दिशा में आज काफी परिवर्तन देखे जा रहे हैं। भारत सरकार ने ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए कई कार्यक्रम चलाए हैं। जिनमें से प्रमुख रूप से राष्ट्रीय महिला साक्षरता मिशन, राष्ट्रीय ग्रामीण मिशन, राजीव गांधी किशोरी सशक्तीकरण योजना, जननी सुरक्षा योजना, महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना आदि शामिल हैं । इनके अलावा महिलाओं को सुरक्षा प्रदान करने के लिए सरकार ने राष्ट्रीय महिला आयोग की स्थापना की, जो महिलाओं के अधिकारों की सुरक्षा उन्हें अपनी भूमिका के प्रति जागरूकता प्रदान करती है।

वैश्वीकरण एवं महिलाएं- महिलाएं प्रत्येक समाज का महत्वपूर्ण अंग मानी जाती है। हमारे भारतीय समाज में पुरुष के अभाव में स्त्री एवं स्त्री के अभाव में पुरुष अधूरा माना जाता है। स्त्री हमारे समाज में पुरुष की अर्धांगिनी मानी गई है। वैश्वीकरण के परिणाम स्वरूप महिलाओं के लिए एक नए विकल्प का उदय हुआ। जिसका प्रभाव महिलाओं के जीवन के हर पहलू पर देखा जा रहा है ।महिलाएं विकास का सूत्रधार मानी गई है। यह विशेषता चरितार्थ होती दिखाई दे रही है । आज वैश्वीकरण की लहर ने महिलाओं के जीवन में काफी सुधार किए हैं । विशेष कर विकासशील देशों की महिलाओं के जीवन में। फिर भी यह चिंतनीय मुद्दा बना हुआ है। कि शिक्षा,रोजगार ,स्वास्थ्य, नागरिक अधिकारों सहित जीवन के कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों में महिलाएं सुविधाओं से आज भी वंचित हैं। लैंगिक असमानताओं की समस्या को खत्म करने के लिए संयुक्त राष्ट्र ने लैंगिक समानता एवं महिलाओं के सशक्तिकरण को प्राथमिकता प्रदान की है ।जिस पर बहुत तेजी से काम भी किया जा रहा है। आज भी पुरुषों की तुलना में अधिकतर महिलाएं अनौपचारिक रूप से कार्यों में संलग्न होती हैं। फिर भी उनकी स्थिति पुरुषों से दयनीय होती है। अधिकतर महिलाएं कम वेतन पर काम करती हुई नजर आती है। विकासशील देशों में महिलाओं के लिए रोजगार के अवसरों की उच्च मांग सामाजिक संरचना में महत्वपूर्ण बदलाव ला सकती है।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने महिलाओं की स्थिति को बेहतर बनाने के लिए अनेकों प्रस्ताव पारित किये।जैसे स्त्री पुरुष के लिए समान कार्य, समान वेतन कानून का प्रावधान किया जाए। महिलाओं को संसाधनों ,रोजगार, बाजार एवं व्यापार, सूचना एवं तकनीकी में बराबरी की हिस्सेदारी दिलाई जाए। महिलाओं के लिए ऐसा प्लेटफार्म उपलब्ध कराया जाए। जहां पर वह अपने बातों एवं अपने कौशल का प्रदर्शन कर सके।

महिलाओं के ऊपर वैश्वीकरण के सकारात्मक प्रभाव को देखें तो वैश्वीकरण के माध्यम से महिलाओं की औसत मजदूरी में वृद्धि दर्ज की गई है। पारिवारिक आय में वृद्धि के साथ-साथ महिलाओं की सामाजिक भागीदारी में स्थिति भी सुधार हुआ है । वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने महिलाओं और पुरुषों के लिए कई नए रास्तों को खोला है। महिलाओं की वेतन में वृद्धि हुई है। महिलाओं के प्रति पारंपरिक विचारों को उखाड़ने का काम किया है वैश्वीकरण ने। भारत एक कृषि प्रधान देश है ।ऐसे में हमारे देश की महिलाओं को कृषि क्षेत्र में अपनी आय बढ़ाने के अवसर अनेकों मिल जाते हैं। महिलाओं को सिर्फ कृषि क्षेत्र में ही नहीं बल्कि औद्योगिक,शक्षेत्र एवं सेवा क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण लाभों की प्राप्ति हो रही है।

महिलाओं के ऊपर वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभावों को देखें तो महिलाओं को घरों के कामकाज देखने होते हैं। कार्यस्थल पर भी जाना होता है । ऐसे में घर और कार्यस्थल की जिम्मेदारी को एक साथ संभालना महिलाओं के लिए एक चुनौती पूर्ण विषय बना हुआ है। क्योंकि घरेलू कार्य जो भी महिलाएं करती हैं ।उनका कोई भी भुगतान उन्हें नहीं किया जाता है।

वैश्वीकरण ने गरीबी में जी रहे लोगों के जीवन को सुदढता प्रदान की है । बेहतर जीवन के अनेकों आयाम उपलब्ध कराए है। मीडिया और विज्ञापनों के कारण लोगों के जीवन की जरूरत में वृद्धि हो रही है। वैश्वीकरण एसी प्रक्रिया है जिसने देश विदेश की विभिन्न संस्थाओं को सहायता प्रदान कर महिलाओं को आने को अवसर उपलब्ध कराने का काम किया है। हमारे देश में स्व-नियोजित महिला संघ महिला मजदूरों का एक संघ है। जो कड़ी मेहनत व किसी भी काम के अवसर को प्राप्त करने के लिए हर समय ततपर रहती है। महिलाओं को ध्यान में रखते हुए अंतरराष्ट्रीय संगठन ने शिक्षा, चिकित्सा सहायता एवं विकास इत्यादि के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने पर विशेष जोर दिया है।

आज महिलाएं न केवल कार्यस्थलों पर अपना स्थान बनाई है। बल्कि शासन में भी महत्वपूर्ण रुचि एवं स्थान प्राप्त कर रही हैं। सासद व न्यायालयों में महिलाओं की आवाज सुनी जा रही है। मीडिया ने भी ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को वैश्वीकरण के प्रति जागरूकता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वैश्वीकरण ने विकासशील देशों को वैश्विक बाजारों में अपनी प्रतिस्पर्धा को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया है। साथ ही साथ महिला रोजगार की मांग में भी वृद्धि देखी गई है। जहां एक वैश्वीकरण में महिलाओं के लिए अवसरों की उपलब्धता में वृद्धि की है। वहीं दूसरी तरफ लैंगिक असमानता की समस्या से अभी तक भी निजात नहीं मिल पाया है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने भारत में सांप्रदायिक और आध्यात्मिक संबंधों के कामकाज को भी प्रभावित किया है।इस प्रभाव को हम भारतीय समाज की महिलाओं में देख सकते हैं। नए सामाजिक प्रतिमानों के प्रमुख होने के साथ आज भारतीय महिलाएं पुरुषों के साथ काम करने और प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम है ।हालांकि यह अभी भी एक चुनौती पूर्ण विषय बना हुआ है। फिर भी इसमें काफी सफलता देखी जा रही है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से महिलाएं आर्थिक स्वतंत्रता का आनंद उठा रही है। सामाजिक रूप से जागरूक होकर वित्तीय स्वतंत्रता महसूस कर रही है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया नै ना सिर्फ भारतीय महिलाओं के जीवन पर अपने महत्वपूर्ण प्रभाव बिखेरे हैं। बल्कि संपूर्ण विश्व की महिलाओं के जीवन पर वैश्वीकरण की स्थिति का गहरा प्रभाव पड़ा है। जिससे महिलाओं का सामाजिक, आर्थिक ,राजनीतिक एवं बहुआयामी सशक्तिकरण हुआ है।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से ही महिलाएं आज विभिन्न देशों में पलायन कर रही हैं। यद्यपि यह पलायन आंतरिक क्षेत्र में भी होता है। प्रवासी महिलाएं श्रमिक गंतव्य देश में आर्थिक विकास में योगदान देती हैं। फिर भी यह चिंतनीय मुद्दा है। कि महिलाओं के कार्यों पर ध्यान नहीं दिया जाता।

नई संचार प्रौद्योगिकी की बढ़ती पहुंच के कारण महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग प्रभावशाली साबित हुआ है। आज दुनिया भर की अनेको महिलाएं नेटवर्किंग सूचना का प्रचार प्रसार एवं आदान-प्रदान ,उत्पादकों को अपने उत्पादों को वैश्विक स्तर पर बेचने में मदद करने के लिए डिजाइन की गई रचनात्मक ई कॉमर्स जैसे विकास उद्देश्यों के लिए इंटरनेट और ईमेल का प्रभावी उपयोग

करते हुए दिखाई दे रही हैं। यह सब कहीं ना कहीं शिक्षा के माध्यम से भी संभव हो पाया है। फिर भी यह स्वीकार किया जाना चाहिए कि दुनिया की लाखों सबसे गरीब महिलाएं और पुरुषों के पास अभी भी इन सुविधाओं की उपलब्धता नहीं है। अतः इस पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है।

निष्कर्ष

वैश्वीकरण एक दिन में उपजी अवधारणा नहीं है। भारत में वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने महिलाओं की दिशा और दशा दोनों को परिवर्तित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज दुनिया भर के संगठन एकजुट व संगठित होकर महिला अधिकारों की रक्षा करने के लिए संगठनों की स्थापना करने पर विशेष जोर दे रहे हैं। महिलाएं समाज में पुरुषों से निम्न मानी जाती रही है। इस चुनौती से निपटने के लिए उन्हें अनेकों मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। आज सच्चाई है कि वैश्वीकरण में महिला- पुरुष के मध्य प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा प्रदान किया है। तथा लैंगिक समानता पर भी विशेष जोर दिया है। वैश्वीकरण एक अपरिवर्तनीय अपरिहार्य प्रक्रिया मानी जा सकती है। महिलाएं राष्ट्रीय -अंतरराष्ट्रीय स्तर पर काफी सक्रियता के साथ आगे बढ़ रही है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से ही आज महिलाएं विश्व स्तर पर शिक्षा प्राप्त करने में सफल हो रही हैं।और शिक्षित होकर महिलाएं अधिकारों के बारे में जागरूक हो रही है जो आत्मविश्वास और आत्म सम्मान पैदा करती है। हमारे देश में महिलाएं पुरुषों से हैं मानी जाती रही हैं और यही हीन भावना महिलाओं में आज भी निहित है।लेकिन वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने इस दुर्भावना को दूर करने में काफी सफलता प्राप्तकी है। अन्य राष्ट्रों के संपर्क में आने से महिलाओं ने स्वतंत्रता, समानता,व व्यक्ति के अधिकारों के बारे में जाना और समझा । लैंगिक पूर्वाग्रह की भावना से व्याप्त समस्या से काफी हद तक निजात पाई। भोजन एवं फैशन के विकल्प बहुत तेजी से परिवर्तित हो रहे हैं। और महिलाएं आज परंपराओं की अहेलना करती हुई नजर आ रही हैं । क्योंकि वे सही और वैज्ञानिक चीजों को अपनाना चाहती हैं । पारंपरिक चीजों से दूरी बनती हुई दिखाई दे रही है। आज महिलाएं समय के अनुसार पहनावा, खान-पांच ,रीति रिवाज रहन-सहन, को अपने दैनिक जीवन में ढाल रही हैं। महिला समूहों के वैश्विक संगठन ने भी मीडिया का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। जो देश में महिलाओं के सामने आने वाली वर्तमान कठिनाइयों के बारे में आम जनता को शिक्षित करने में महत्वपूर्ण है। सरल शब्दों में कहे तो यह मीडिया ही है जो वैश्वीकरण की छाप गांव के हर कोने में बिखरने का काम किया है। हमेशा इस बात को भी ध्यान रखना चाहिए कि मानवीय क्षमताओं में निवेश अर्थव्यवस्था की विकास क्षमता को बढ़ावा देता है। विकास में महिलाओं की भूमिका पर विशेष जोर देना चाहिए। क्योंकि कोई एक पहलू कमजोर हुआ तो, विकास कभी भी अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाएगा। आज जरूरत इस चीज की है कि महिलाओं के श्रम को सीधे उत्पादन से जोड़ा जाए। क्योंकि यही कारण है कि पुरुष विशिष्ट हो गया और औरतें महत्वहीन रह गई। इस प्रकार वैश्वीकरण जहां विकासशील देशों के विकास को

सुनिश्चित करता है। वही समाज के आर्थिक रूप से गरीब महिलाओं को भी अच्छा जीवन एवं अच्छे अवसर उपलब्ध कराने का प्रयास करता है ।अतः वैश्वीकरण जहां महिलाओं के लिए लाभदायक सिद्ध हुआ है। वहीं इसके कुछ कमियां भी देखी गई हैं ।फिर भी हमारी सरकार महिलाओं की स्थिति को सुदृढ़ता प्रदान करने के लिए अनेकों अभियान एवं कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाओं को जागरूक बनाने का प्रयास कर रही है। भूमंडलीकरण का महिलाओं को उचित लाभ पहुंचे। इसके लिए रोजगार की अनेकों नीतियों को तैयार करना होगा । ऐसे अवसरों का निर्माण करना होगा जिसमें महिलाएं विकास की प्रक्रिया में भागीदारी कर सके। इसके लिए वैश्वीकरण की प्रक्रिया के स्वरूप को बदलने की जरूरत है। ताकि महज लाभ पर केंद्रित नीतियों की बजाय ऐसी नीतियां बनेगी जो लोगों पर केंद्रित हो और महिलाओं के प्रति अधिक जवाबदेही सुनिश्चित कर सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1-सिंह प्रतिमा, वैश्वीकरण का अवधारणात्मक विकास व महिला सशक्तिकरण

2-अपर्णा शर्मा, भूमंडलीकरण और नारी विमर्श

3-सिंह जगदीप, कुमारीममता, भारत में महिलाओं पर वैश्वीकरण का प्रभाव: एक महत्वपूर्ण समीक्षा

4-वर्मा ममता, अग्रवाल नीलम, सार्क देशों के मध्य महिला सशक्तिकरण पर वैश्वीकरण का प्रभाव: एक तुलनात्मक अध्ययन

5- पाल शंकर राम, उदारीकरण एवं वैश्वीकरण का ग्रामीण महिलाओं पर प्रभाव

6-कुमार विपिन, वैश्वीकरण एवं महिला सशक्तिकरण :विविध आयाम

7-कुमार डॉ. निशु, महिला सशक्तिकरण और सुरक्षा विषयक चुनौतियां , प्रशांत पब्लिशिंग हाउस

8-गौतम प्रकाश ज्ञान, महिला सशक्तिकरण एवं वैश्वीकरण

9-Richard.L.Devid, Women's status and economic Globalization

10-Ruspini Elisabetta,From the effect of Globalization on women to women's Agency in Globalization

11-Hoda Dr Sobhy, Women and globalisation

12-Molina Teresa, Globalization and female empowerment evidence from Myanmar

13-Marc M gray,milki coul kittleson and Wayne
Sandholtz, Women and globalization : A Study of 180 countries 1975-2000

14-UN Women